583
24/9/12

खण्ड : 2 संख्या : 18, 19

दशम् बिहार विधान-सभा वादवृत्त

(द्वितीय सत्र)

(भाग-1 कार्यवाही प्रश्नोत्तर)

सत्यमेव जयते

शनिवार, दिनांक : 21 जुलाई 1990 ई०
बुधवार, दिनांक : 25 जुलाई 1990 ई०

विद्युत् का उत्पादन

11. श्रीमती ज्योति: क्या मंत्री, ऊर्जा विभाग, यह बतलाने की कृपा करेंगे कि–

(1) क्या यह बात सही है कि राज्य में दो हजार मेगावाट पन बिजली उत्पादन की क्षमता है जबकि अभी केवल 200 मेगावाट पन बिजली का ही उत्पादन हो रहा है;

(2) क्या यह बात सही है कि पिछले पांच वर्षों में 35 करोड़ रुपये पन बिजली के संधारण में खर्च किए गए हैं पर इससे अनुपातिक लाभ नहीं हुआ;

(3) यदि उपर्युक्त खंडों के उत्तर स्वीकारात्मक हैं, तो सरकार पन बिजली उत्पादन में अपेक्षित वृद्धि का प्रयास करने का विचार रखती है?

श्री जगदानन्द सिंह : (1) बिहार विद्युत बोर्ड की कुल पन बिजली उत्पादन की क्षमता 149.2 मेगावाट है। जिसमें स्वर्ण रेखा जल विद्युत परियोजना की स्थापित क्षमता 130 मेगावाट है और इसमें 130 मेगावाट विद्युत उत्पादन होता है। कोशी जल विद्युत परियोजना की स्थापित क्षमता 19.2 मेगावाट है और नहर में कम जल बहाब के कारण मात्र 3 मेगावाट विद्युत उत्पादन वर्त्तमान में इस परियोजना से हो रहा है।

(2) नकारात्मक है। विगत पांच वर्षों में पानी 1984–85 से 1988–89 तक पनबिजली उत्पादन में कुल व्यय, परिचालन, अनुरक्षण, स्थापना सूद एवं मूल्य ह्रास सहित 33.46 करोड़ रुपये हुआ है। इसके विरुद्ध इनसे अनुपातिक करीब 68.53 करोड़ रुपये का राजस्व, बोर्ड को प्राप्त हुआ है।

प्रत्येक वर्ष खर्च एवं अनुपातिक राजस्व का आंकड़ा निम्नलिखित है–

वर्ष	खर्च	राजस्व
1984-85	622.86	1421.21
1985-86	628.99	1263.88
1986-87	658.11	1319.62
1987-88	731.88	1430.91
1988-89	614.33	1417.05 (ओप०)

प्रश्न-1 के उत्तर से यह स्पष्ट है कि 149.2 मेगावाट स्थापित क्षमता के विरुद्ध 133 मेगावाट का उत्पादन एवं संतोषप्रद आंकड़ा है।

(3) कोशी जल-विद्युत परियोजना, कोशी नहर पर स्थापित रहने के कारण सिंचाई मांग के सम्यक ही इस परियोजना से विद्युत उत्पादन होता था। 12 जून, 1990 से सिंचाई विभाग ने इस परियोजना को निरंतर परिचालन में रखने के लिये दो स्केप चैनलों को खोल दिया है। इस कारण 12 जून, 1990 से सिंचाई मांग न रहने पर भी इस परियोजना से लगातार 5 मेगावाट विद्युत उत्पादन एक मशीन द्वारा हो रहा है।

श्रीमती ज्योति : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से जानना चाहती हूं कि पूरे राज्य में जब 149 मेगावाट बिजली उत्पादन करने की क्षमता है और मात्र 113 मेगावाट बिजली पैदा होती है, तो बाकी बिजली पैदा नहीं होने का क्या कारण है?

श्री जगदानंद सिंह : अध्यक्ष महोदय, हमारी जो उत्पादन ईकाइयां हैं। एक सुवर्ण रेखा जिसकी उत्पादन क्षमता 130 मेगवाट की है। उसमें 130 मेगावाट का उत्पादन हो रहा है। दूसरा है 19 मेगावाट का जो नहर प्रणाली से जुड़ी हुई है। जब नहरों में पानी की मांग होती है तो उसी के अनुसार वह इकाई चलती है।

लेकिन इस साल हमने अलग से व्यवस्था की है, कि नहर से पानी की मांग नहीं होने पर भी इसके पानी को बेलवा घाट में डालते हुए उत्पादन किया जाय। अध्यक्ष महोदय, हम बताना चाहते हैं कि 365 दिन में, 100 दिन की अधिकतम रिकार्ड बिजली उत्पादन कर रहा है। इस साल जो हमने योजना बनायी है और ऐसी व्यवस्था की है कि यह इकाई 260 दिन उत्पादन में रहे।

श्री अनुपलाल यादव : अध्यक्ष महोदय, मैं वहां का रहने वाला हूं। कोशी विद्युत परियोजना की जानकारी मुझे है। मंत्री महोदय को असलियत की जानकारी नहीं है। मैं जानना चाहता हूं कि 2 मेगावाट बिजली कब से पैदा होती है? 19 मेगावाट बिजली उत्पादन को बरकरार रखने के लिये सरकार क्या कार्रवाई कर रही है। मुझे जानकारी है कि उसमें कुछ तकनीकी गड़बड़ियां हैं उसमें सुधार लाने से 19 मेगावाट बिजली उत्पादन हो सकता है। मंत्री उसको सुधारने का भी काम करें।

श्री जगदानंद सिंह :अध्यक्ष महोदय, मैंने स्वयं कहा कि 19 मेगावाट स्थापित क्षमता है। कोशी केनाल से जुड़ी हुयी पनबिजली उत्पादन इकाई का। लेकिन उसके स्थापना के वक्त ही एक भारी गड़बड़ी हुयी है जिसका परिणाम आज तक भुगतना पड़ रहा है। इस बार जब हमने जांच कराया तो उसका नजीजा निकला कि बराज के जिस लेवल पर 19 मेगावाट उत्पादन का डिजाइन है आज के सारे इंजीनियरों ने बता दिया है कि उस लेवल को मेन्टेन करना असंभव है और बराज के जीवन पर भी खतरा उत्पन्न हो जायगा। 20 फीट हाइट से पानी टरबाइन में निकलेगा तो 19 मेगावाट बिजली पैदा होगी लेकिन 12-13 फीट ज्यादा हाइट से पानी हम नहीं दे सकते हैं। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि पूरे साल पनबिजली से उत्पादन हो। जब नहर चलता

था तो 1-2 मेगावाट बिजली उत्पादित होती थी। आज माना जा चुका है कि अधिकतम प्रयास करने बाद भी 7-8 मेगावाट से ज्यादा पनबिजली नहीं पैदा कर सकते हैं। 100 दिन से ज्यादा बिजली विगत 7-8 वर्षों से हुआ ही नहीं। इसलिए मैंने बताया कि 360 दिन बिजली पैदा करने से 7-8 मेगावाट ऐट ए टाइम बिजली पैदा होगी इसके लिये हमने प्रयास किया है।

श्री रघुवंश प्र० सिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं जानना चाहता हूं कि किन-किन स्थानों पर पनबिजली परियोजनायें कार्याधीन या निर्माणाधीन हैं?

श्री जगदानंद सिंह : यह सवाल दूसरी जगह चला गया।

श्री रघुवंश प्र० सिंह : मंत्री जी, कुछ विकास की बात भी तो बतायें।

श्री बिलट पासवान विहंगम: अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से जानना चाहता हूं कि बिजली का जो आज संकट है उसका कारण है कि मुजफ्फरपुर में 3 मशीन, बरौनी में 3 मशीन, पतरातू में 4 मशीन खराब है और ओवर वायलिंग में चला गया है जिसके चलते बिजली की कमी हो रही है? यह बात सही है? कुल मिलाकर 16 संयंत्र ओवर वायलिंग में है, यह बिजली संकट का कारण है कि नहीं?

(जवाब नहीं मिला)

जेनरेटर की व्यवस्था

12. **श्रीमती ज्योति :** क्या मंत्री, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, यह बतलाने की कृपा करेंगे कि-